بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 11.09.2026
محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب-143516

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा **11 September**, 202**6,** स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(Tabook महीने की तिथि 11 ,1405 हश)

तवक्कुल अलल्लाह के हवाले से सीरतुन्नबी ﷺ का ईमान अफ़रोज़ तज़करः।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमायाः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तवक्कुल अलल्लाह के हवाले से गुज़श्ता जुमे को बयान किया था। आज भी यही मज़मून है।

आँहज़रत ﷺ अपने लिए तवक्कुल के हवाले से किस तरह दुआ मांगा करते थे। इस बारे में एक रिवायत में आता है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब आप ﷺ रुकू में जाते तो यह दुआ करते थेः कि ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए रुकू किया, और तुझ पर ही ईमान लाया, और मैंने अपने आपको तेरे सुपुर्द किया, और तुझ पर तवक्कुल किया। तू ही मेरा रब है। मेरी समाअत और बसारत और ख़ून और गोश्त और हड्डियां और आसाब अल्लाह तआला के लिए झुक गए हैं जो तमाम जहानों का रब है।

फिर एक रिवायत में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़र्माया: जब कभी मुझे कोई परेशानी होती तो जिब्राईल मेरे सामने ज़ाहिर होता और कहता: ऐ मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप कहें: कि मैंने उस ज़िंदा हस्ती पर तवक्कुल किया, जो कभी नहीं मरेगी। तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिसने कभी कोई बेटा इख़्तियार नहीं किया और जिसकी बादशाहत में कभी कोई शरीक नहीं हुआ और कभी उसे ऐसे साथी की ज़रूरत नहीं पड़ी, जो गोया कमज़ोरी की हालत में उसका मददगार बनता, और तू बड़े ज़ोर से उसकी बड़ाई बयान किया कर। हुज़ूरे अनवर ने फ़र्माया कि आँहज़रत ﷺ की हर वक़्त अल्लाह तआला पर ही नज़र रहती थी।

आप ﷺ की इस सिफ़त के आला म्यार का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक तक़रीर में बयान फ़र्माया है कि रसूले करीम ﷺ को ख़ुदा तआला पर ऐसा तवक्कुल था कि हर मुसीबत और मुश्किल के वक़्त उसी पर नज़र रखते और उसके सिवा हर शै से तवज्जो हटा देते।

इसमें कोई शक नहीं है कि आप ﷺ आजकल के सूफ़िया की तरह असबाब के तारिक न थे। असबाब को इस्तेमाल करते थे। क्योंकि असबाब का तर्क गोया ख़ुदा तआला की मख़्लूक की हतक करना और उसकी पैदाइश को लग़्व क़रार देना है। लेकिन असबाब के मुहैय्या करने के बाद आप ﷺ बकुल्ली ख़ुदा तआला पर तवक्कुल करते। और गो असबाब मुहैय्या करते लेकिन उन पर भरोसा और तवक्कुल कभी न करते थे, और सिर्फ़ ख़ुदा ही के फ़ज़्ल के उम्मीदवार रहते। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आप ﷺ हर एक घबराहट के वक़्त फ़र्माते: **लॉ इलाहा इल्लल्लाह हुवा रब्जुल अर्शिल अज़ीम लॉ इलाहा इल्लल्लाह हुवा रब्बुस समावाति वा रब्बुल अर्ज़ि वा रब्बुल अर्शिल करीम**। कोई माबूद नहीं सिवाय अल्लाह के, वह रब है बड़े तख़्ते हुकूमत का, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह आसमानों का रब है, वह ज़मीन का रब है, वह बुज़ुर्ग तख़्त का रब है, यानी मेरा भरोसा और तवक्कुल अल्लाह तआला पर ही है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़र्माया कि विभिन्न मौक़ों पर मुशरिकीने मक्का का आँहज़रत ﷺ को पेशकश करना, यानी विभिन्न क़िस्म के लालच देना और नबी करीम ﷺ का अल्लाह तआला पर बेमिसाल तवक्कुल करते हुए जवाब देने का ज़िक्र करते हुए फ़र्माया कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने इन ऐतिहासिक घटनाओं का नक्शा खींचते हुए इस तरह बयान किया है कि आँहज़रत ﷺ ने जब अल्लाह तआला की तौहीद के मुतअल्लिक लोगों को वाज़ करना शुरू किया और शिर्क की तर्दीद शुरू की तो मक्के वालों को यह बात बहुत नागवार गुज़री और आख़िर एक दिन समझौता करके वह एक वफ़्द की सूरत में रसूले करीम ﷺ के चाचा अबू तालिब के पास आए और उन्हें कहा कि आप हमारी क़ौम के सरदार हैं, आपका हम बहुत अदब करते हैं और आप के अदब की वजह से हम आप के भतीजे को कुछ नहीं कहते। मगर अब मामला हद से गुजर गया है। और हम आपके पास इसलिए आए हैं कि आप उससे इस मामले में हमारी तरफ़ से आख़िरी बात करें, और फिर वह बातें दोहराई कि जो उत्बा बिन रबीआ ने आँहज़रत ﷺ से भी की थीं। यानी आला घराने का लालच और सब से ज़्यादा हसीन औरत का लालच, रुपये का लालच, दौलत का लालच, हुकूमत का लालच, यह देकर इन लोगों ने कहा कि मगर उसको कहें कि वह इतना लिहाज़ तो करे कि हमारे बुतों को बुरा भला न कहे। हम उसे यह नहीं कहते कि वह हमारे बुतों को मान ले, हम सिर्फ़ यह कहते हैं कि हमारे बुतों को बुरा भला न कहे, और अगर वह इन बातों में से हमारी एक बात भी न माने तो फिर आप उसका साथ छोड़ दें, हम ख़ुद उससे निपट लेंगे।

अबू तालिब ने रसूले करीम ﷺ को बुलवाया और इनकी पेशकशों का ज़िक्र करते हुए उनके इस मुतालबा को सामने रखा कि ग़रज़ वह कोई भी मुतालबा करे, तो हम उसे पूरा करने के लिए तैयार हैं, वह सिर्फ़ इतना करे कि हमारे बुतों को बुरा भला न कहे। जब रसूले करीम ﷺ ने अपने चाचा की यह हालत देखी, तो उनके एहसानात को याद कर के आप ﷺ की आंखों में आंसू आ गए। मगर आप ﷺ ने फ़र्माया: चाचा! मैं तो नहीं कहता कि आप मेरी मदद करें, आप बेशक अपनी क़ौम का साथ दें, और मुझे छोड़ दें। ख़ुदा की क़सम! अगर यह लोग सूरज को मेरे दाएं और चांद को मेरे बाएं भी ला कर खड़ा कर दें, तब भी मैं ख़ुदा के ज़िक्र से बाज़ नहीं आऊंगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़र्माया कि यह अल्लाह तआला की ज़ात पर यक़ीने कामिल और तवक्कुल का वह मक़ाम है जो कहीं नज़र नहीं आता। इस घटना का ज़िक्र करते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम बयान फ़र्माते हैं कि जब यह आयतें उतरीं कि मुशरिकीन रिज्स हैं, पलीद हैं,

शररुल बरीय्या हैं यानी बदतरीन मख़्लूक हैं, सुफ़हा हैं यानी बेवकूफ़ लोग हैं और ज़ुर्रियते शैतान हैं और उनके माबूद वक़ूदुन नार यानी आग का ईंधन हैं और हसबु जहन्नम हैं, जहन्नम का ईंधन हैं, तो अबू तालिब ने आँहज़रत ﷺ को बुला कर कहा कि ऐ मेरे भतीजे! अब तेरी दुश्नाम देही से क़ौम सख्त मुश्तइल हो गई है और क़रीब है कि तुझको हलाक कर दे और साथ ही मुझको भी। तूने उनके अक़्लमंदों को सफ़ीह क़रार दिया और उनके बुज़ुर्गों को शररुल बरीय्या कहा और उनके क़ाबिले ताज़ीम माबूदों का नाम हीज़मे जहन्नम यानी जहन्नम का ईंधन और वक़ूदुन नार रखा और आम तौर पर उन सब को रिज्स और ज़ुर्रियते शैतान और पलीद ठहराया। मैं तुझे ख़ैर ख़्वाही की राह से कहता हूं कि अपनी ज़बान को थाम और दुश्नाम देही से बाज़ आ जा, वरना मैं क़ौम के मुकाबले की ताक़त नहीं रखता। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब में कहा कि ऐ चाचा! यह दुश्नाम देही नहीं है, बल्कि इज़हारे वाक़्या और नफ़्सुल अम्र का ऐन महल पर बयान है, और यही तो काम है जिसके लिए मैं भेजा गया हूं। अगर इससे मुझे मरना दरपेश है, तो मैं बखुशी अपने लिए इस मौत को क़बूल करता हूं। मेरी ज़िंदगी इसी राह में वक़्फ़ है। मैं मौत के डर से इज़हारे हक़ से रुक नहीं सकता। और ऐ चाचा! अगर तुझे अपनी कमज़ोरी और अपनी तकलीफ़ का ख़्याल है , तो तू मुझे पनाह में रखने से दस्तबरदार हो जा। बख़ुदा! मुझे तेरी कुछ भी हाजत नहीं। मैं अहकामे इलाही के पहुंचाने से कभी नहीं रुकूंगा। मुझे अपने मौला के अहकाम जान से ज़्यादा अज़ीज़ हैं। बख़ुदा! अगर मैं इस राह में मारा जाऊं तो चाहता हूं कि फिर बार बार ज़िंदा होकर हमेशा इसी राह में मरता रहूं। यह ख़ौफ़ की जगह नहीं, बल्कि मुझे इसमें बेहद लज़्ज़त है कि उसकी राह में दुख उठाऊं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह तक़रीर कर रहे थे और चेहरे पर सचाई और नूरानियत से भरी हुई रक़्क़त नुमाया हो रही थी और जब आँहज़रत ﷺ यह तक़रीर ख़त्म कर चुके तो हक़ की रोशनी देख कर बेइख़्तियार अबू तालिब के आंसू जारी हो गए और कहा कि मैं तेरी इस आला हालत से बेख़बर था। तू और ही रंग में और और ही शान में है। जा! अपने काम में लगा रह, जब तक मैं ज़िंदा हूं, जहां तक मेरी ताक़त है, मैं तेरा साथ दूंगा।

इसी तरह ताएफ़ से वापसी पर आँहज़रत ﷺ के तवक्कुल का एक वाक़्या है, आप ﷺ अकेले हैं, ताएफ़ के सरदारों को तब्लीग़ के लिए निकले हैं। जिन्होंने ज़ुल्म की इन्तेहा की। वापस आते हैं। बज़ाहिर मक्का में भी दाख़िल होने की कोई सूरत नहीं है। एक ख़ादिम साथ है। और ख़ादिम परेशान है कि अब क्या होगा? लेकिन आप ﷺ को अपने रब पर पूरा यक़ीन और पूरा तवक्कुल है।

चुनांचे इस का ज़िक्र करते हुए वही ख़ादिम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि जब मैंने आप ﷺ की ख़िदमत में यह अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह ﷺ ! अब आप मक्का में कैसे दाख़िल होंगे, जबकि वह आपको निकाल चुके हैं, तो रसूल अल्लाह ﷺ ने किस शाने तवक्कुल से जवाब दिया कि ऐ ज़ैद! तुम देखोगे कि अल्लाह तआला ज़रूर कोई राह निकाल देगा। और अल्लाह तआला अपने दीन का मददगार है। वह अपने नबी को ग़ालिब कर के रहेगा। चुनांचे नबी करीम ﷺ ने सरदाराने क़ुरैश को पैग़ाम भिजवाए कि आप ﷺ को अपनी पनाह में लेकर मक्का में दाख़िले का इंतज़ाम करें। सारे सरदारों ने इनकार किया। आख़िर एक शरीफ़ सरदार मुतइम बिन अदी ने आप ﷺ को अपनी पनाह में मक्का में दाख़िल करने का ऐलान किया।

हिजरते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मौक़े पर तवक्कुल अलल्लाह् के नमूने क्या थे। आँहज़रत ﷺ को जब हिजरत की इजाज़त मिली तो आप ﷺ ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने हिजरत के प्रोग्राम से आगाह करते हुए उनके सुपुर्द एक जांनिसाराना काम यह किया कि आज रात वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिस्तरे मुबारक पर वही सोए रहें। एक रिवायत के मुताबिक़ सुर्ख़ रंग की हज़्रमी चादर ओढ़ कर सोएंगे, जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद लेकर सोया करते थे और अपने इस जांनिसार फ़िदाई ख़ादिम को ख़ुदाई ताईद व नुसरत की यक़ीन दहानी कराते

हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि फ़िक्र न करना और बड़े आराम से मेरे बिस्तर पर सोए रहना, दुश्मन तुम्हारा बाल भी बीका नहीं कर सकता।

इस के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घर से बाहर तशरीफ़ लाए, जबकि कुफ़्फ़ारे मक्का के चुनिंदा बहादुर जिनकी आंखों में गोया ख़ून उतरा हुआ था, वह तलवारें हाथ में लिए ऐन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर के बाहर चाक़ व चौबंद पहरा दे रहे थे कि कब रात गहरी हो और हम धावा बोल कर एक ही वार में रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गोया काम तमाम कर दें नउज़ुबिल्लाह! और अबू जहल जो कि गोया उनका सरग़ना था, बड़े तकब्बुर और तमस्ख़ुर से यह कह रहा था कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) यह कहता है कि अगर तुम उसके मामले में उसकी पैरवी करोगे तो तुम अरब व अजम के बादशाह बन जाओगे, फिर तुम अपनी मौत के बाद उठाए जाओगे, तो तुम्हारे लिए उर्दुन के बाग़ात की मानिंद बाग़ात बनाए जाएंगे और अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारे दरम्यान क़त्ल व ग़ारतगरी होगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर निकले और फ़र्माया कि हां! ऐसे ही मैं कहता हूं और सूर: यासीन की आयात दो ता दस पढ़ते हुए और इनके सरों पर ख़ाक डालते हुए इन के सामने से निकल गए। लेकिन ख़ूदा की क़ुदरत कि आप ﷺ जाते हुए किसी को भी दिखाई न दिए, बल्कि वह लोग गाहे-गाहे अंदर झांक कर देख लेते और इत्मीनान कर लेते कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने बिस्तर पर ही हैं।

ख़ुत्ब: के आख़िर में हुज़ूरे अनवर ने फ़र्माया कि हिजरत के वाक़्या और आप ﷺ के तवक्कुल और जुर्रत का ज़िक्र करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम फ़र्माते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का सिद्क़ उस आग के वक़्त ज़ाहिर हुआ जब आँहज़रत ﷺ का मुहासिरा किया गया ..... ऐसी हालत में हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने सिद्क़ और वफ़ा का वह नमूना दिखलाया जो अबदुल आबाद तक के लिए नमूना रहेगा .... दुश्मन ग़ार पर मौजूद हैं और विभिन्न क़िस्म की राय ज़नियां हो रही हैं। बाज़ कहते हैं कि इस ग़ार की तलाशी करो क्योंकि निशाने पा यहां तक ही आकर ख़त्म हो जाता है, लेकिन इनमें से बाज़ कहते हैं कि यहां इंसान का गुज़र और दख़ल कैसे होगा? मकड़ी ने जाला तना हुआ है, कबूतर ने अंडे दिए हुए हैं, इस क़िस्म की बातों की आवाज़ें अंदर पहुंच रही हैं। और आप ﷺ बड़ी सफ़ाई से उनको सुन रहे हैं। ऐसी हालत में दुश्मन आए हैं कि वह ख़ातमा करना चाहते हैं और दीवाने की तरह बढ़ते आए हैं, लेकिन आप ﷺ की कमाल शुजाअत को देखो कि दुश्मन सर पर है और आप ﷺ अपने रफ़ीक़े सादिक़ सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़र्माते हैं :**ला तहज़न इन्नल्लाहा मअना**। यह अलफ़ाज़ बड़ी सफ़ाई के साथ ज़ाहिर करते हैं कि आप ﷺ ने ज़बान ही से फ़र्माया, क्योंकि यह आवाज़ को चाहते हैं, इशारा से काम नहीं चलता। बाहर दुश्मन मशवरा कर रहे हैं और अंदर ग़ार में ख़ादिम व मख़्दूम भी बातों में लगे हुए हैं। इस अम्र की परवाह नहीं की गई कि दुश्मन आवाज़ सुन लेंगे। यह अल्लाह तआला पर कमाल ईमान और मआरिफ़त का सबूत है। ख़ूदा तआला के वादों पर पूरा भरोसा है।

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंव व बारिक व सल्लिम।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔